

MPSE- 007 (part-2)
MOST IMPORTANT QUESTIONS & EXPECTED TOPICS
EXCLUSIVE FOR JUNE 2024
SOCIAL MOVEMENTS AND POLITICS IN INDIA
In both HINDI & ENGLISH

TOPIC-1

DISCUSS WITH SUITABLE EXAMPLES THE SIGNIFICANCE OF SOCIAL MOVEMENTS

Significance of Social Movements:

Catalysts for Social Change

Social movements often act as catalysts for significant social change by raising awareness about issues and mobilizing public opinion. For example, the Civil Rights Movement in the United States during the 1950s and 1960s brought attention to racial discrimination and led to landmark legislation such as the Civil Rights Act of 1964.

सामाजिक आंदोलन अक्सर मुद्दों के बारे में जागरूकता बढ़ाकर और जनमत को संगठित करके महत्वपूर्ण सामाजिक परिवर्तन के उत्प्रेरक के रूप में कार्य करते हैं। उदाहरण के लिए, 1950 और 1960 के दशक के दौरान संयुक्त राज्य अमेरिका में नागरिक अधिकार आंदोलन ने नस्लीय भेदभाव की ओर ध्यान आकर्षित किया और 1964 के नागरिक अधिकार अधिनियम जैसे महत्वपूर्ण कानूनों को जन्म दिया।

Empowerment of Marginalized Groups

Social movements provide a platform for marginalized groups to voice their concerns and demand their rights. The Women's Suffrage Movement is a prime example, where women fought for and won the right to vote in many countries, significantly altering their social and political status.

सामाजिक आंदोलन हाशिए पर पड़े समूहों को अपनी चिंताओं को व्यक्त करने और अपने अधिकारों की मांग करने के लिए एक मंच प्रदान करते हैं। महिला मताधिकार आंदोलन एक प्रमुख उदाहरण है, जहां महिलाओं ने मतदान का अधिकार प्राप्त करने के लिए संघर्ष किया और कई देशों में अपने सामाजिक और राजनीतिक स्थिति को महत्वपूर्ण रूप से बदल दिया।

Policy Reforms

Social movements can lead to significant policy reforms by pressuring governments to address issues. The Environmental Movement has led to the creation of numerous environmental laws and regulations worldwide, such as the Clean Air Act and the Clean Water Act in the United States.

सामाजिक आंदोलन सरकारों पर मुद्दों को संबोधित करने के लिए दबाव डालकर महत्वपूर्ण नीतिगत सुधार ला सकते हैं। पर्यावरण आंदोलन ने विश्व स्तर पर कई पर्यावरण कानूनों और विनियमों के निर्माण का नेतृत्व किया है, जैसे कि संयुक्त राज्य अमेरिका में स्वच्छ वायु अधिनियम और स्वच्छ जल अधिनियम।

Cultural Shifts

Movements often lead to cultural shifts by challenging existing norms and values. The LGBTQ+ Rights Movement has played a critical role in changing societal attitudes towards homosexuality and promoting the acceptance of diverse sexual orientations and gender identities.

आंदोलन अक्सर मौजूदा मानदंडों और मूल्यों को चुनौती देकर सांस्कृतिक बदलाव लाते हैं। LGBTQ+ अधिकार आंदोलन ने समलैंगिकता के प्रति सामाजिक दृष्टिकोण को बदलने और विविध यौन अभिविन्यास और लैंगिक पहचान की स्वीकृति को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

Strengthening Democracy

By engaging citizens in collective action and advocacy, social movements strengthen democratic processes. The Anti-Corruption Movement in India, led by Anna Hazare, mobilized millions of people

and brought transparency and anti-corruption measures to the forefront of political discourse.

सामूहिक कार्रवाई और वकालत में नागरिकों को शामिल करके, सामाजिक आंदोलन लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं को मजबूत करते हैं। अन्ना हज़ारे के नेतृत्व में भारत में भ्रष्टाचार विरोधी आंदोलन ने लाखों लोगों को संगठित किया और राजनीतिक चर्चाओं में पारदर्शिता और भ्रष्टाचार विरोधी उपायों को प्राथमिकता दी।

Global Solidarity

Social movements can foster global solidarity by connecting struggles across borders. The Global Climate Strike, inspired by Greta Thunberg, saw millions of young people worldwide demand action on climate change, highlighting the interconnectedness of global environmental issues.

सामाजिक आंदोलन सीमाओं के पार संघर्षों को जोड़कर वैश्विक एकजुटता को बढ़ावा दे सकते हैं। ग्रेटा थनबर्ग से प्रेरित वैश्विक जलवायु हड़ताल में दुनिया भर में लाखों युवाओं ने जलवायु परिवर्तन पर कार्रवाई की मांग की, जिससे वैश्विक पर्यावरणीय मुद्दों की पारस्परिकता को उजागर किया गया।

Educational Impact

Social movements educate the public about critical issues and historical injustices. The Black Lives Matter movement has brought widespread awareness to systemic racism and police brutality, prompting educational institutions and media to address these topics more thoroughly.

सामाजिक आंदोलन महत्वपूर्ण मुद्दों और ऐतिहासिक अन्यायों के बारे में जनता को शिक्षित करते हैं। ब्लैक लाइव्स मैटर आंदोलन ने प्रणालीगत नस्लवाद और पुलिस की बर्बरता के बारे में व्यापक जागरूकता लाई है, जिससे शैक्षिक संस्थानों और मीडिया को इन विषयों को अधिक गहराई से संबोधित करने के लिए प्रेरित किया है।

These examples illustrate the profound impact social movements can have on society, driving progress and fostering a more just and equitable world.

ये उदाहरण इस बात को स्पष्ट करते हैं कि सामाजिक आंदोलनों का समाज पर गहरा प्रभाव हो सकता है, जिससे प्रगति हो सकती है और एक अधिक न्यायसंगत और समान दुनिया की दिशा में प्रगति हो सकती है।

TOPIC 2

How information technology impacted Indian society.

Impact of Information Technology on Indian Society

Economic Growth and Employment

Information Technology (IT) has significantly contributed to India's economic growth. The IT sector, including software services and IT-enabled services (ITES), has become one of the largest contributors to the Indian economy. Cities like Bangalore, Hyderabad, and Pune have emerged as IT hubs, creating millions of jobs and boosting related industries.

सूचना प्रौद्योगिकी ने भारत की आर्थिक वृद्धि में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। आईटी क्षेत्र, जिसमें सॉफ्टवेयर सेवाएं और आईटी-सक्षम सेवाएं (ITES) शामिल हैं, भारतीय अर्थव्यवस्था के सबसे बड़े योगदानकर्ताओं में से एक बन गया है। बेंगलुरु, हैदराबाद और पुणे जैसे शहर आईटी हब के रूप में उभरे हैं, जिससे लाखों नौकरियां पैदा हुई हैं और संबंधित उद्योगों को बढ़ावा मिला है।

Education and Learning

IT has revolutionized education by providing access to a vast array of online resources, e-learning platforms, and digital classrooms. Initiatives like SWAYAM and DIKSHA have made quality education accessible to remote and underprivileged areas.

आईटी ने ऑनलाइन संसाधनों, ई-लर्निंग प्लेटफार्मों और डिजिटल कक्षाओं तक पहुंच प्रदान करके शिक्षा में क्रांति ला दी है। स्वयम् और दीक्षा जैसी पहलों ने गुणवत्तापूर्ण शिक्षा को दूरदराज और वंचित क्षेत्रों तक पहुँचाया है।

Governance and Public Services

The adoption of IT in governance, through initiatives like Digital India, has enhanced the efficiency and transparency of public services. E-governance platforms provide various services such as online tax filing, digital land records, and electronic voter registration, reducing corruption and streamlining administrative processes.

डिजिटल इंडिया जैसी पहलों के माध्यम से शासन में आईटी को अपनाने से सार्वजनिक सेवाओं की दक्षता और पारदर्शिता बढ़ी है। ई-गवर्नेंस प्लेटफॉर्म विभिन्न सेवाएं प्रदान करते हैं जैसे ऑनलाइन कर दाखिल करना, डिजिटल भूमि रिकॉर्ड, और इलेक्ट्रॉनिक मतदाता पंजीकरण, जिससे भ्रष्टाचार में कमी आई है और प्रशासनिक प्रक्रियाओं को सुगम बनाया गया है।

Healthcare

IT has transformed the healthcare sector by enabling telemedicine, electronic health records (EHRs), and health information systems. Platforms like eSanjeevani provide remote consultation services, improving access to healthcare in rural and remote areas.

आईटी ने टेलीमेडिसिन, इलेक्ट्रॉनिक स्वास्थ्य रिकॉर्ड (EHRs), और स्वास्थ्य सूचना प्रणालियों को सक्षम करके स्वास्थ्य क्षेत्र को बदल दिया है। ईसंजीवनी जैसे प्लेटफॉर्म दूरस्थ परामर्श सेवाएं प्रदान करते हैं, जिससे ग्रामीण और दूरस्थ क्षेत्रों में स्वास्थ्य सेवा तक पहुँच में सुधार हुआ है।

Social Connectivity and Communication

Social media platforms and messaging apps have revolutionized communication, allowing people to connect and share information instantly. Platforms like WhatsApp, Facebook, and Twitter have become integral to daily life, influencing social interactions and public discourse.

सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म और मैसेजिंग ऐप ने संचार में क्रांति ला दी है, जिससे लोग तुरंत जुड़ सकते हैं और जानकारी साझा कर सकते हैं। व्हाट्सएप, फेसबुक और ट्विटर जैसे प्लेटफॉर्म दैनिक जीवन का अभिन्न हिस्सा बन गए हैं, जो सामाजिक बातचीत और सार्वजनिक विमर्श को प्रभावित करते हैं।

E-commerce and Digital Payments

The rise of e-commerce platforms like Flipkart, Amazon, and digital payment systems such as UPI and Paytm has transformed the retail landscape in India. It has increased convenience, expanded market access for small businesses, and promoted a cashless economy. फ्लिपकार्ट, अमेज़न जैसे ई-कॉमर्स प्लेटफॉर्म और यूपीआई और पेटीएम जैसी डिजिटल भुगतान प्रणालियों के उदय ने भारत में खुदरा परिदृश्य को बदल दिया है। इसने सुविधा बढ़ाई है, छोटे व्यवसायों के लिए बाजार की पहुंच का विस्तार किया है, और नकद रहित अर्थव्यवस्था को बढ़ावा दिया है।

Agriculture

IT has impacted agriculture through initiatives like eNAM (National Agriculture Market), which connects farmers to a unified online market. Mobile apps and online platforms provide farmers with real-time information on weather, crop prices, and best farming practices.

आईटी ने ईएनएम (राष्ट्रीय कृषि बाजार) जैसी पहलों के माध्यम से कृषि को प्रभावित किया है, जो किसानों को एक एकीकृत ऑनलाइन बाजार से जोड़ता है। मोबाइल ऐप और ऑनलाइन प्लेटफॉर्म किसानों को मौसम, फसल की कीमतों और सर्वोत्तम कृषि प्रथाओं पर रीयल-टाइम जानकारी प्रदान करते हैं।

Entertainment and Media

The advent of digital streaming services like Netflix, Amazon Prime, and Hotstar has revolutionized the entertainment industry, providing a wide range of content accessible anytime, anywhere. It has changed how people consume media and entertainment.

नेटफ्लिक्स, अमेज़न प्राइम और हॉटस्टार जैसी डिजिटल स्ट्रीमिंग सेवाओं के आगमन ने मनोरंजन उद्योग में क्रांति ला दी है, जो कहीं भी, कभी भी सुलभ सामग्री की एक विस्तृत श्रृंखला प्रदान करती है। इसने लोगों के मीडिया और मनोरंजन के उपभोग के तरीके को बदल दिया है।

The impact of information technology on Indian society is profound and multifaceted, driving progress across various sectors while also presenting new challenges.

भारतीय समाज पर सूचना प्रौद्योगिकी का प्रभाव गहरा और बहुआयामी है, जो विभिन्न क्षेत्रों में प्रगति को बढ़ावा देता है और साथ ही नई चुनौतियाँ भी प्रस्तुत करता है।

TOPIC 3

What is relative deprivation theory

Relative Deprivation Theory

Relative deprivation theory is a sociological concept that explains the feelings of discontent and frustration that arise when individuals or groups perceive that they are deprived of something to which they believe they are entitled, especially when compared to others. This theory is often used to understand social movements, social change, and individual behavior.

सापेक्ष अभाव सिद्धांत एक समाजशास्त्रीय अवधारणा है जो असंतोष और हताशा की भावनाओं की व्याख्या करती है जो तब उत्पन्न होती हैं जब व्यक्तियों या समूहों को लगता है कि वे उस चीज़ से वंचित हैं जिसके वे हकदार हैं, खासकर जब दूसरों की तुलना में। इस सिद्धांत का उपयोग अक्सर सामाजिक आंदोलनों, सामाजिक परिवर्तन और व्यक्तिगत व्यवहार को समझने के लिए किया जाता है।

Key Concepts of Relative Deprivation Theory:

Perception of Deprivation:

The theory focuses on the subjective perception of deprivation rather than objective measures. It's not the absolute lack of resources that causes discontent but the perception that one has less than others or less than what one believes is deserved.

सापेक्ष अभाव सिद्धांत वस्तुनिष्ठ उपायों के बजाय अभाव की व्यक्तिपरक धारणा पर केंद्रित है। असंतोष का कारण संसाधनों की पूर्ण कमी नहीं है,

बल्कि यह धारणा है कि किसी के पास दूसरों की तुलना में या किसी के योग्य के मुकाबले कम है।

Comparison Groups:

Individuals compare themselves to reference groups—people who they believe are similar to themselves or with whom they identify. If they perceive that these groups have more resources or better conditions, they may feel relatively deprived.

व्यक्ति खुद की तुलना संदर्भ समूहों से करते हैं—लोग जो उन्हें समान लगते हैं या जिनसे वे पहचान रखते हैं। अगर उन्हें लगता है कि इन समूहों के पास अधिक संसाधन या बेहतर स्थितियाँ हैं, तो वे अपेक्षाकृत वंचित महसूस कर सकते हैं।

Entitlement and Expectation:

Relative deprivation occurs when there is a gap between what people believe they deserve (their entitlements) and what they actually have (their reality). This gap generates feelings of injustice and dissatisfaction.

सापेक्ष अभाव तब होता है जब लोगों के विश्वास (उनके अधिकार) और उनकी वास्तविकता (वास्तविकता) के बीच अंतर होता है। यह अंतर अन्याय और असंतोष की भावनाएँ उत्पन्न करता है।

Types of Deprivation:

Deprivation can be relative to different aspects such as economic status, social status, political power, or access to opportunities. For example, a person might feel deprived if they perceive their income is lower compared to their peers.

अभाव विभिन्न पहलुओं के सापेक्ष हो सकता है जैसे आर्थिक स्थिति, सामाजिक स्थिति, राजनीतिक शक्ति, या अवसरों तक पहुँच। उदाहरण के लिए, कोई व्यक्ति वंचित महसूस कर सकता है यदि उसे लगता है कि उसकी आय उसके साथियों की तुलना में कम है।

Motivation for Social Action:

Relative deprivation is often a motivating factor for social movements and collective action. When groups of people feel relatively deprived, they may organize to demand changes, seek justice, or improve their conditions.

सापेक्ष अभाव अक्सर सामाजिक आंदोलनों और सामूहिक कार्यवाही के लिए एक प्रेरक कारक होता है। जब लोग अपेक्षाकृत वंचित महसूस करते हैं, तो वे बदलाव की मांग करने, न्याय पाने, या अपनी स्थिति में सुधार करने के लिए संगठित हो सकते हैं।

Examples of Relative Deprivation:

Civil Rights Movement:

African Americans in the United States experienced relative deprivation when comparing their rights and socioeconomic status to those of white Americans. This perception fueled the Civil Rights Movement of the 1950s and 1960s

संयुक्त राज्य अमेरिका में अफ्रीकी अमेरिकियों ने अपने अधिकारों और सामाजिक-आर्थिक स्थिति की तुलना श्वेत अमेरिकियों से करने पर सापेक्ष अभाव का अनुभव किया। इस धारणा ने 1950 और 1960 के दशक के नागरिक अधिकार आंदोलन को प्रज्वलित किया।

Economic Inequality:

In modern societies, individuals often compare their economic status with that of their neighbors or colleagues. When they perceive significant disparities, they may experience feelings of relative deprivation, which can lead to social unrest.

आधुनिक समाजों में, व्यक्ति अक्सर अपनी आर्थिक स्थिति की तुलना अपने पड़ोसियों या सहकर्मियों से करते हैं। जब उन्हें महत्वपूर्ण असमानताएँ दिखाई

देती हैं, तो वे सापेक्ष अभाव की भावनाओं का अनुभव कर सकते हैं, जिससे सामाजिक अशांति हो सकती है।

Political Movements:

Relative deprivation can also explain the rise of political movements. For instance, working-class people might feel deprived relative to the elite, leading to movements demanding better wages, working conditions, and representation.

सापेक्ष अभाव राजनीतिक आंदोलनों के उदय को भी समझा सकता है। उदाहरण के लिए, श्रमिक वर्ग के लोग अभिजात वर्ग की तुलना में वंचित महसूस कर सकते हैं, जिससे बेहतर वेतन, कार्य स्थितियाँ, और प्रतिनिधित्व की माँग करने वाले आंदोलन पैदा होते हैं।

Relative deprivation theory provides a framework for understanding how perceptions of inequality and injustice can drive individual and collective behavior, leading to social change.

सापेक्ष अभाव सिद्धांत यह समझने के लिए एक ढांचा प्रदान करता है कि असमानता और अन्याय की धारणाएँ कैसे व्यक्तिगत और सामूहिक व्यवहार को प्रेरित कर सकती हैं, जिससे सामाजिक परिवर्तन होता है।